प्रेम वाहिनी

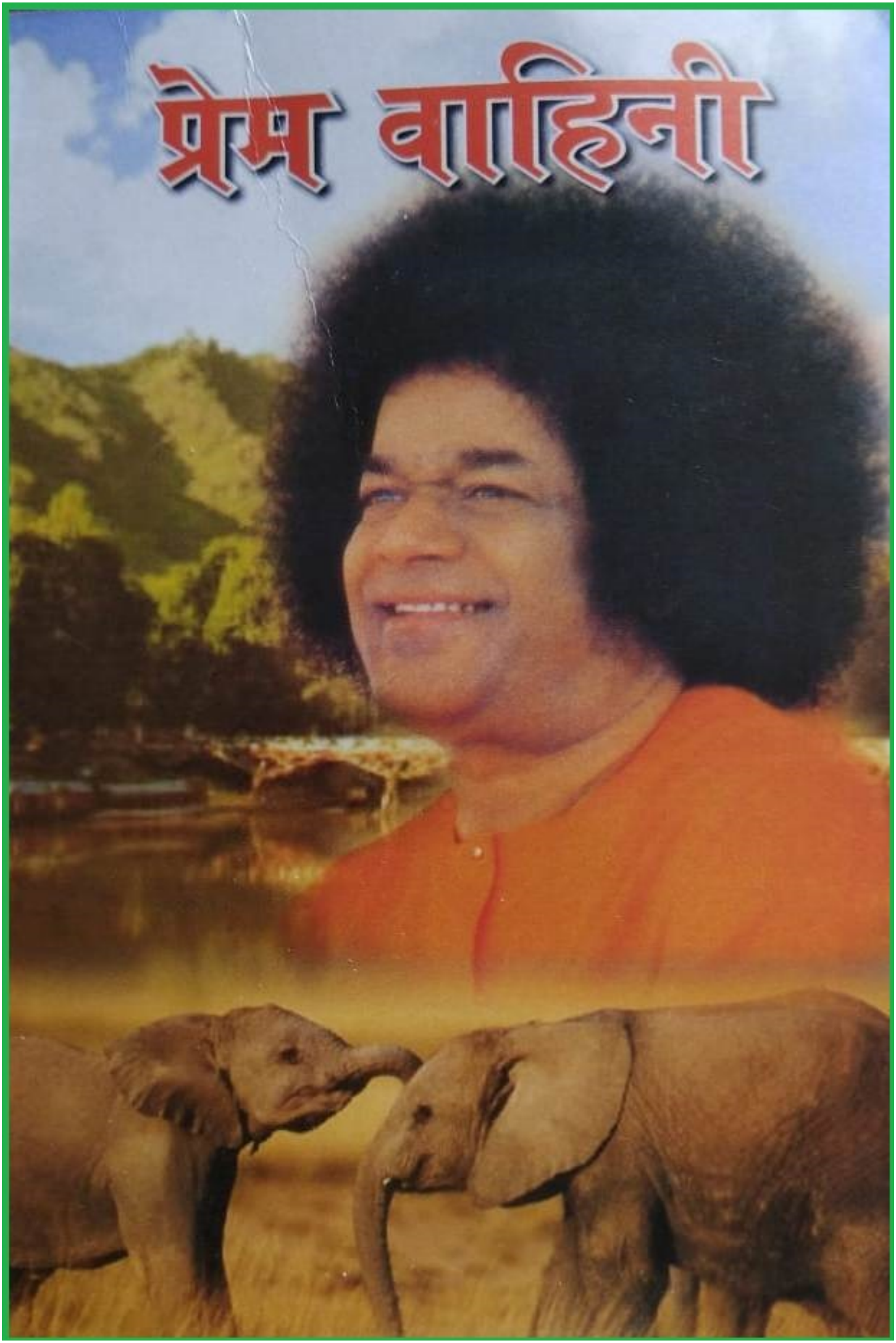

११

मूर्ति-पूजा

संसार में अनेकों ऐसे हैं जो मूर्ति-पूजा की निंदा करते हैं। परन्तु इसका आधार तो व्यक्ति की वह क्षमता है कि जिसके द्वारा वह पिण्ड में ब्रह्माण्ड का दर्शन पा लेता है। मूर्ति-पूजा का महत्व तो मनुष्य के अनुभव में आ सकने वाली बात है। इसके लिए मानवीय कल्पना पर नहीं निर्भर रहना पड़ता है। भगवान के विराट् स्वरूप में जो कुछ पाया जाता है वह शुद्ध वैसा ही उसी महिमा के साथ मूर्ति रूप में भी अनुभव किया जा सकता है। मूर्त रूप केवल काव्य के रूपक का अथवा उपमा इत्यादि की तरह कार्य करता है। वे उदाहरण द्वारा व्याख्या द्वारा चित्रित कर स्पष्ट करते हैं।

आनन्द मनुष्य को वस्तुओं की आकृति से नहीं, बलिक् स्थापित सम्बन्ध से प्राप्त होता है। माँ को केवल अपनी सन्तान से ही प्रसन्नता होती है, हर किसी बच्चे से नहीं। ऐसा ही प्रत्येक व्यक्ति और सब वस्तुओं के विषय में समझ लेना चाहिए। इस विश्व की प्रत्येक व्यक्ति से यदि वस्तु जैसा संबंध, जिसे वास्तव में भगवत्प्रेम कहते हैं, स्थगित कर लेता है तो कैसे अद्भुत् सर्वग्राही आनन्द का अनुभव किया जा सकता है इसे तो कोई बिरला भुक्त-भोगी ही समझ सकता है !